नियम में लापरवाही न करें

हर खेल अपने नियम अनुसार खेला जाता है। यदि खेल में से नियम निकाल दें तो फिर खेल हुड़दंग रह जाएगा। कभी ताश या शतरंज खेलने वाले को ध्यान से देखिएगा, इनके कुछ नियम हैं, और यदि किसी एक ने भी नियम तोड़ा तो फिर समझो खेल खत्म। इसी खेल को हमारी भारतीय संस्कृति में लीला कहा गया है।

मनुष्य के जीवन जीने के दो ढ़ंग है, वह प्रकृति के अनुसार दिया गया है। परमात्मा ने प्रकृति इतनी नियम अनुसार बनाई है कि वह लीला का एक हिस्सा है। अब वह नियम, हम मनुष्यों को भी पालन करना है। यदि नहीं पालन करते या तोड़ते हैं तो जीवन का खेल गड़बड़ा जायेगा। फिर लीला में ऐसे दृश्य शुरू हो जाते हैं कि हमें लगता है कि यह सब क्या हो रहा है! भगवान क्या कर रहा है! भगवान ने कुछ नहीं किया। उसने तो एक बार नियम बना दिया और अब हमें उसी के अनुसार चलना है। यह बात जीवन के हरेक दौर में बहुत काम आयेगी। यदि जीवन को खेल की तरह लेंगे तो एक उत्साह बना रहेगा, हम उसके नियमों का पालन करेंगे। जीवन में कोई

एक जीतता है, पर लीला का सबसे बड़ा आनंद यह है कि जब नियम पालते हैं तो दोनों ही पक्ष जीत जाते हैं। परमात्मा अपने बच्चों को हराना नहीं चाहता। जब भी हारेंगे, खुद की गलती से हारेंगे, स्वयं नियम तोड़कर हारेंगे। इसलिए इस वक्त ज़रा भी नियम पालने में लापरवाही की तो अंजाम क्या होगा..! परमात्मा ने हमें बताया कि बच्चे, यह जन्म आपका बहुत-बहुत मूल्यवान है। आप जो चाहो वो हासिल कर सकते हो, बशर्ते यह नियम - 'योगी भवः, पवित्र भवः का पालन करें'।

पहला, योगी का मतलब है जीवन के साथ परमात्म शक्ति का जुड़ा रहना। परमात्म शक्तियों का उपयोग, प्रयोग करना। जैसे कि कोई आप पर गुस्सा कर रहा बेवजह, तब भी आप अपने आपको शांत रखेंगे, उनके कृत्य से नफ़रत, घृणा का भाव अपने अंदर प्रवेश नहीं होने देंगे।

यहाँ हम चुप तो रह लेंगे किन्तु साथ-साथ उनके कृत्य के प्रभाव से भी मुक्त रहना होगा। ऐसी परिस्थिति जब आती है तब परमात्म शक्तियों का उपयोग कर अपने आपको संभालेंगे, न कि प्रतिक्रिया करेंगे। परमात्मा की शिक्षाओं को स्मृति में लाकर अपने आपको आवेश से बचा कर रखेंगे। साक्षी दृष्टा होकर इस घटना रूपी खेल को देखेंगे।

दूसरा, 'पवित्र भवः' के नियम का शत-प्रतिशत पालन करेंगे। पवित्रता एक अद्भुत शक्ति है। पवित्रता की शक्ति परमात्मा के साथ जोड़े रखती है। बिना पवित्रता परमात्म प्यार मिलना मुश्किल है। पवित्रता के बल से निडर रह सकते। जहाँ थोड़ा-सा भी स्वार्थ है वहाँ भय अवश्य रहेगा। और जहाँ भय है वहाँ प्रभाव के बिना रह नहीं सकेंगे।

हमें सदा याद रखना होगा कि हम पवित्रता के फरिश्ता हैं। फरिश्ते किसी भी घटना, स्थान, परिस्थिति, व्यक्ति, वैभव के प्रभाव में नहीं आते। वे दिव्य कर्म करके न्यारे रहते हैं। 'नेकी कर दरिया में डाल' - ये उक्ति फरिश्तों के लिए ही है। फरिश्ते अपने कर्त्तव्य बोध को याद रखते हुए, इस संसार में विचरण करते हुए, साक्षी होकर संसार को खेल की तरह देखते हैं। वे न प्रभाव, लगाव, झुकाव में आते। वे तो बस परमात्म कार्य करके आनंद में रहते हैं। परमात्मा के बताए नियम को पालन करते हुए प्रकृति के संग रहते हैं। प्रकृति के नियमों का उल्लंघन नहीं करते। परिणामस्वरूप वे दुःख-सुख के चक्र से परे होते हैं। वे इन नियमों के पालन में ज़रा भी लापरवाही नहीं बरतते। 'मौलाई मस्त फकीर' बन विचरण करते हैं। इसी प्रकार हमें जीवन की यात्रा में प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना है। परमात्म शक्तियों का उपयोग करते हुए अपने को बंधनों से मुक्त रखना है। कहीं न रुकना है, न अटकना है और न ही अपने नियमों से भटकना है। यह सुहावना वक्त है ईश्वरीय सानिध्य में रहने का, उनका आनंद लेने का। अपने कार्मिक बोझ से हल्के होने का। इन नियमों की लाल बत्ती क्रॉस करना माना दुःख, बेचैनी को निमंत्रण देना।

ज्वालामुखी योग माना अपना अनादि स्वरूप स्मृति में इमर्ज रहे

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

ज्वालामुखी योग माना अपना अनादि स्वरूप स्मृति में इमर्ज रहे। मेरा अनादि स्वरूप लाइट है। लाइट का अर्थ हल्का और प्रकाश है। जिस समय हम लाइट हाउस रूप स्थिति में बैठते हैं उस समय हम नैचुरल लाइट बन जाते हैं। अगर किसी कारण से आप एकदम ज्योति रूप में स्थित नहीं हो सकते हो तो कर्म करते फरिश्ते रूप की लाइट का शरीर धारण करो। ये पांच तत्वों के बजाय लाइट का शरीर है, उस रूप में स्थित रहो। यही ज्वालामुखी की विधि है।

इसके लिए सिर्फ "मैं और मेरा" का ध्यान रखना है। हम सब सर्विस के निमित्त हैं लेकिन निमित्त भाव में रहते हैं? निमित्त भाव हल्का बनाता है। अगर मेरा और मैं आ जाता है तो यही बोझ है। इससे हल्का होने की विधि बाबा ने बहुत अच्छी सिखाई है- जब भी मैं कहो, तो उसमें मैं आत्मा एड करो और जब मेरा शब्द बोलते हो तो उसमें मेरे के साथ मेरा बाबा एड करो। मैं भले कहो, उसमें आत्मा याद आ जाये, मेरा कहो तो बाबा याद आ जाये। तो पहले ये चेक करने से ज्वालामुखी योग द्वारा स्व का परिवर्तन कर सकते हैं।

ज्वालामुखी माना पावरफुल योग जिससे पुराने संस्कार जलकर भस्म हो सकते हैं। आग तेज होगी तो जलकर नाम निशान खत्म होगा। अगर आग ढीली है तो आधा जलेगा, आधा रह जायेगा। ज्वालामुखी योग माना पॉवरफुल लाइट-माइट, शक्तियां, सुख-शान्ति, आनन्द सब इमर्ज हों, उससे वायब्रेशन फैलें।

ऐसी स्थिति बनाने के लिए कुछ बातों की चेकिंग ज़रूरी है -

अमृतवेले से लेकर जो बाबा के डायरेक्शन हैं, श्रीमत है, उस श्रीमत प्रमाण हम कहाँ तक चलते हैं? योग के लिए भी टाइम फिक्स हो। रोज़ का अभ्यास ज़रूरी है। मुरली सुनते ऐसा अनुभव हो कि बाबा पर्सनल मेरे से बात कर रहा है। फिर हर कर्म करते दफ्तर, सेन्टर सब निमित्त भाव से सम्भालना है। निमित्त भाव, निर्मान भाव और निर्मल वाणी ये तीन बातें हमारे हर कर्म में होनी चाहिए। यह श्रीमत बाबा ने दे दी है। फिर अगर सेवा करो तो सेवा में भी खुद पहले उस स्वरूप में स्थित होकर उसको अनुभव कराओ। सेवा के प्रति भी बाबा ने ये अनुभव का इशारा दिया है, दूसरा निमित्त बन कर निर्मल वाणी से सेवा करनी है तभी हम ज्वालामुखी योग को प्रैक्टिकल में ला सकेंगे। फिर हम एक ही स्थान पर बैठकर लाइट-माइट हाउस बनके सारे विश्व की आत्माओं को शक्ति दे सकते हैं। यह मन्सा सेवा ही है, सिर्फ पॉवरफुल योग हो इसलिए बाबा ने ज्वालामुखी योग कहा है। जिसमें और कोई बात नहीं हो, कोई भी संस्कार हमारा इमर्ज न हो। तो ज्वालामुखी योग से स्व और सेवा में डबल फायदा हो जायेगा।

अपनी बुद्धि को सोने के बर्तन समान स्वच्छ बनाना है

राजयोगिनी दादी जानकी जी

हम सभी के दिल से क्या निकलता है? शुक्रिया बाबा आपका। बाबा आपका जितना शुक्रिया मानें उतना कम है। आज के ज़माने में थैंक्स कहना या सॉरी कहना कॉमन है, परन्तु हम जो सॉरी कहते हैं वो दुबारा सॉरी कहना न पड़े, तो अच्छा है। श्रीमत पर चलने वाले को अपनी मनमत चलाने की आवश्यकता नहीं है। श्रीमत क्या है, उसे हम सबने जाना है। सचखण्ड में जाने के लिए बाबा सच्ची बातें सुना करके हर बात से पार लेके जा रहा है। किनारा छोड़ा है तो बीच में नैया भले हिलेगी-डोलेगी पर डूबेगी नहीं। विश्वास से पार होके आ गये हैं।

बुद्धि में कोई प्रकार का तनाव नहीं है, खींचातान नहीं है, बड़ी दिल है, सच्ची दिल, रहमदिल है तो और कोई बातें हों भी तो उन्हें छोड़ो तो छूटो। कैसे छोड़ूँ, क्लेशचन नहीं है? संगम पर जिन बच्चों ने जीवन सफल किया है, उनकी सफल जीवन को देखकर अनेकों की जीवन सफल हुई है। वह मम्मा-बाबा के सिवाए और किसको नहीं देखते, अगर और किसी को देखेंगे तो क्यों और क्या का बड़ा चक्कर शुरु हो जायेगा। साक्षी हो करके देखा कि मम्मा बाबा ने ऐसे कभी क्यों, क्या का शब्द मुख से बोला है? कभी चेहरे से भी ऐसा दिखाई दिया है? इस बात में फॉलो करने वाली आत्मायें, अतीन्द्रिय सुख में झूलने वाली आत्मायें खुशी से हाँ जी, जी बाबा करती रहेंगी। आत्मा को परमात्मा से सुख-शान्ति और शीतलता की डायरेक्ट प्राप्ति है तो आत्माओं को अनुभव हो जाता है। कोई कितना भी प्रयत्न करे लेकिन उनकी यह लगन टूट नहीं सकती, छूट नहीं सकती। उसमें एक तरफ विकर्म विनाश हुए तो आत्मा शुद्ध, शान्त हो जाती है।

बाबा क्या सिखा रहा है, वो हमारी सूरत में कहाँ तक आया है, वो देखो। लक्ष्मी-नारायण को वरने जैसी स्थिति है? जो यहाँ सुख-शान्ति प्रेम सम्पन्न आत्मा बन जाए, ऐसे योगी अगर अभी हम बने हैं तो बाबा कहेंगे यह योगेश्वर है। तो अपने ऊपर ऐसी दया, रहम करना अपने लिए सच्चाई है। इसके लिए क्यों, क्या में नहीं आना, इससे टाइम वेस्ट हो जाता है। तुम अपना काम करो, क्या हुआ, कुछ नहीं हुआ, जो हुआ सो अच्छा हुआ। तुम तो अच्छा कर लो। तो हर बात की बाबा ऐसी बुद्धि हमको दे रहा है, जो करके सोचना नहीं है और जो बाबा ने सिखाया है वो करना है। बाबा ने तो सबकुछ सिखाया है, चलना, बोलना, बैठना भी सिखाया है, मुस्कुराना भी सिखाया है। जोर से हँसने वाले भी बाबा को अच्छे नहीं लगते हैं। ऐसी-ऐसी भूलें भी ज्ञानी तू आत्मा के लिए शोभती नहीं हैं इसलिए अपनी बुद्धि को सोने के बर्तन समान स्वच्छ बनाना है। इतना अच्छा, सच्चा, सयाना, समझदार बनना है।

साइलेन्स की शक्ति जमा करो

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

अभी हम सब इस देह से, इस पुरानी दुनिया से, इन 5 तत्वों से भी पार हो साइलेन्स में बैठे हैं। साइलेन्स एक बड़ी पॉवर है, इसमें सर्व शक्तियां समाई हुई हैं। जैसे साइंस वालों ने साइंस पॉवर से शक्तिशाली वस्तुयें बनाई हैं- एटम बॉम्ब आदि। तो हम ऑलमाइटी अथॉरिटी अर्थात् सर्व शक्तियों से सम्पन्न परमधाम निवासी हैं। हम आत्मायें पार्टधारी हैं, पार्ट बजाकर अपने घर चले जाने की तैयारी कर रहे हैं। वह आया है पण्डा बनकर हमको साथ ले जाने के लिए। सर्व सम्बन्धों से मुक्त कराकर अपने साथ कनेक्शन भी जुड़ाया है क्योंकि अब घर वापिस जाना है। तो अब यहाँ बैठे भी उस साइलेन्स का अनुभव करना है। जब वहाँ चले जायेंगे तब उस साइलेन्स का अनुभव वर्णन नहीं कर सकेंगे। तो अब शान्ति का अनुभव भी बाप इस ही जीवन में कराते हैं।

जितना-जितना हम मन-बुद्धि को तत्वों से पार ले जायेंगे तो जो स्वीट साइलेन्स होम है, वहाँ जाकर निवास करेंगे। और लाइट-माइट का अनुभव करेंगे। जैसे सितारे आकाश तत्व के अन्दर अपने-अपने स्थान पर चमकते रहते हैं, वैसे हम भी ब्रह्म तत्व में जाकर बाप के साथ उस साइलेन्स की शक्ति का अनुभव कर सकते हैं। बाप को इन आँखों से नहीं देख सकते लेकिन उसके कर्त्तव्य द्वारा, उनके गुणों द्वारा, शक्तियों द्वारा उसका अनुभव होता है। तो जितना हम उसमें स्थित रहेंगे उतना ही हम उस साइलेन्स पॉवर का अनुभव करेंगे। उस याद से हमारे अनेक जन्म के विकर्म विनाश होते हैं और मन के संकल्प-विकल्प भी मर्ज हो जाते हैं। मास्टर ऑलमाइटी की स्टेज का अनुभव होता है। जितना-जितना अभ्यास करते जायेंगे उतना बेहद विश्व की सेवा कर सकेंगे। जो वाचा द्वारा हम सर्विस नहीं कर पाते, वह हम समर्थ संकल्प द्वारा दूर वाली आत्माओं की सेवा कर सकते हैं। बाबा कहते हैं आपके बहुत भक्त हैं, जो आपका आह्वान कर रहे हैं, प्यासे हैं। तो वे हमारी झलक को कब देख सकते हैं? जब हम एकाग्र अवस्था में रहेंगे। हमारा संकल्प उतना चले जो समर्थ हो, व्यर्थ न आवे। वाचा भी उतनी ही चले जो समर्थ हो, सेवा अर्थ हो - व्यर्थ न जावे। ऐसा गुप्त पुरुषार्थ चाहिए। बुद्धियोग की लाइन क्लीयर हो, बुद्धि पवित्र हो तो बाप की प्रेरणाओं को, बाप की पॉवर को कैच कर सकते हैं।

जब हम देह से निकल बाप को याद करते हैं तो बुद्धियोग जुट जाता है तब ही बाप से हम सर्वशक्तियों का अनुभव कर सकते हैं। जब हम इस 5 तत्वों से पार हो जाते हैं। पृथ्वी के आकर्षण से परे हो जाते हैं, तब ही हम रियल शान्ति का अनुभव कर सकते हैं।

हम दुनिया की निगाहों से दूर, आवाज़ से परे परम शान्ति का अनुभव करते हैं, तो आवाज़ में आना पसन्द नहीं आता। हम सिर्फ पार्ट बजाने के लिए कर्मेन्द्रियों का आधार लेकर आते हैं- ऐसे अनुभव होगा।

इस साइलेन्स की शक्ति से क्विक सर्विस कर सकते हैं। साइलेन्स पॉवर दूर-दूर में जाकर काम करेगी। बाबा कहते थे बच्चे तुम विश्व कल्याणी हो। तो हमारा विचार चलता कि हम सारे विश्व की सेवा कैसे करेंगे! जब साइलेन्स पॉवर कई जन्मों के विकर्मों को भस्म कर सकती हैं तो विश्व की आत्माओं की सेवा क्यों नहीं कर सकती। हम सूक्ष्म में किसी भी आत्मा को बुला सकते हैं, उनसे रूहरिहान कर सकते हैं, उसकी लाइट-माइट का दान दे सकते हैं। साइलेन्स पॉवर से ऐसा औरों को अनुभव होगा। सेन्टर पर पांव रखेंगे तो जैसे उन्हों को सन्नाटा महसूस होगा। महसूस होगा कितनी शान्ति है।

यह बहुत मीठी अवस्था है। इससे बहुत शान्ति, अतीन्द्रिय सुख की महसूसता होती है। साइलेन्स पॉवर अर्थात् मास्टर सर्वशक्तिमान की स्थिति। हमारी सिर्फ साइलेन्स नहीं है लेकिन हमारी ओरिज़नल स्टेज जो बाप समान स्टेज है, उसमें स्थित होना है। ओरिज़नल स्टेज है मास्टर सर्वशक्तिमान की स्थिति, जिसमें कोई भी संकल्प की उत्पत्ति नहीं होती है, जिसको दूसरे शब्दों में बीजरूप की स्थिति कहेंगे। हम भी बिन्दु हैं, बाबा भी बिन्दु है, हम बाबा के साथ कनेक्शन जोड़ें, सर्व शक्तियों के स्टॉक को जमा करें। जैसे बाप विश्व कल्याणी है वैसे हम बच्चे हैं, उसको लाइट-माइट अर्थात् शान्ति का पुंज कहें। वह माइट हाउस अर्थात् सर्व शक्तियों से भरपूर होगा। उसकी स्थिति द्वारा सेवा होती रहेगी। दृष्टि द्वारा निराकारी स्थिति का साक्षात्कार होता रहेगा।